18

भेड़िया (केनिस लूपस)

प्रदेश में काफी समय पहले बहुतायत से पाया जाने वाला यह वन्य जीव अब बहुत दुर्लभ हो चला है। इसका मुख्य कारण मनुष्यों की आबादी बढ़ना व प्राकृतिक आहार की कमी है।

भेड़िया कुत्ता प्रजाति का जीव है। इसकी लम्बाई लगभग 90 सेंटीमीटर व ऊँचाई 65 से 75 सेंटीमीटर के मध्य होती है। भेड़िए की पूंछ की लम्बाई लगभग 45 सेंटीमीटर होती है। इसका रंग हल्का भूरा होता है व काले बाल कहीं कम, कहीं ज्यादा मिश्रित होते हैं। भेड़िया वैसे तो जोड़े में रहने वाला जीव है परन्तु प्रायः 6 से 8 के झुण्ड में भी देखा जा सकता है। यह अपनी चालाकी व सतर्कता के लिए प्रसिद्ध है। भेड़िए अपने शिकार को दौड़ाकर सामूहिक रूप से शिकार करते हैं। इनमें दौड़ने और लगभग लगातार चलते रहने की अपूर्व क्षमता है।

भेड़िया माँसाहारी जीव है। यह सामान्यतः छोटे पशु, हिरण, खरगोश, भेड़, बकरी आदि का शिकार करता है। भेड़िया, साँभर व नीलगाय के नवजात शावकों को भी शिकार करता है। प्राकृतिक आहार की कमी के कारण कभी-कभी मानव शिशुओं को उठा लेने की भी आदत बन जाती है। यह मुख्य रूप से प्रदेश के मैदानी व पठारी क्षेत्रों में पाया जाता है।

Uttar Pradesh State Biodiversity Board

Department of Environment, Forests & Climate Change, Government of Uttar Pradesh

East Wing, III Floor, A-Block, PICUP Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226 010, U.P., INDIA

Phone : +91 522 4006746, +91 2306491, E-mail: upstatebiodiversityboard@gmail.com

Website: www.upsbdb.org

© Uttar Pradesh State Biodiversity Board

Year of Publication : 2021

18

गैण्डा (राइनोसिरास यूनिकार्निस)

भारतीय वन्य जीवों में हाथी के बाद गैण्डा सर्वाधिक भीमकाय व शक्तिशाली जीव है। गैण्डों को पुनर्स्थापित करने के लिए दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में वर्ष 1984 से गैण्डा पुनर्वास योजना चलाई जा रही है। नर की ऊँचाई कंधों पर 6 फुट तक होती है। औसत ऊँचाई 5 फुट 8 इंच के लगभग होती है। इसकी त्वचा बहुत मोटी होती है। वैसे तो यह शांत स्वभाव का भीमकाय जीव है, परन्तु फुर्तीला व तेज दौड़ने वाला है। इसकी नाक पर एक सींग होती है, परन्तु यह वास्तव में सींग न होकर बालों का गुच्छा होता है जो कठोर होकर सींग जैसा प्रतीत होता है। इसकी त्वचा काफी मोटी होती है। प्राचीन काल में गैण्डे की खाल ढाल बनाने के लिए प्रयोग की जाती थी।

गैण्डा मुख्यतः दलदली भूमि व घास के मैदानों में रहना पसन्द करता है, परन्तु पहाड़ियों व वनाच्छादित क्षेत्र में भी पाया जाता है। प्रायः यह अकेला रहना पसन्द करता है, परन्तु एक वन क्षेत्र में एक से अधिक गैण्डे रह सकते हैं। यह एक ही स्थान पर मल त्याग करने के कारण यह शिकारियों का आसानी से शिकार बन जाता है। इसकी सींग के साथ कई किम्वदंतियाँ जुड़ी होने व अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अच्छा मूल्य मिलने के कारण सींग के लिए इसका निर्ममता से शिकार किया जाता रहा है। वास्तव में इसकी सींग की औषधि के रूप में उपयोगिता प्रमाणित नहीं है।

नर 7 वर्ष व मादा 4 वर्ष की आयु में प्रजनन योग्य हो जाते हैं। गर्भावस्था काल लगभग 16 माह होता है। जन्म के समय शावक का वजन लगभग 60 किलोग्राम व ऊँचाई लगभग 105 सेंटीमीटर होती है।

राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण
National Biodiversity Authority, India
2003

जहाँ है हरियाली ।
वहाँ है खुशहाली ॥

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड
U.P. STATE BIODIVERSITY BOARD